क्या मैं परमेश्वर के वचन का सही उपयोग कर रहा हूँ?

हो सकता है आप एक अच्छे पास्टर या परमेश्वर के वचन के शिक्षक हों। आपके पास गहरी आत्मिक समझ और ज्ञान हो सकता है। लेकिन एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न यह है:
क्या आप अपने सेवकाई में परमेश्वर के वचन को सही रीति से संभाल रहे हैं?

प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को एक महत्वपूर्ण सिद्धांत बताया:

“यदि कोई खेल में भाग लेता है, तो वह तब तक पुरस्कार नहीं
पाता जब तक कि वह नियमों के अनुसार न खेले।”
— 2 तीमुथियुस 2:5

इसका अर्थ है कि परमेश्वर अपने सेवकों से अपेक्षा करता है कि वे उसके वचन को निष्ठा और सही रीति से उपयोग करें। जैसे एक खिलाड़ी को जीतने के लिए नियमों का पालन करना होता है, वैसे ही एक सेवक को सत्य के वचन को ठीक से बाँटना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:15)। ग्रीक शब्द orthotomeo का अर्थ है — साफ-साफ काटना, यानी शुद्धता से सिखाना और पवित्र शास्त्र को जिम्मेदारी से प्रस्तुत करना।

क्या मैं परमेश्वर के वचन का सही उपयोग कर रहा हूँ?

सच्चे और विश्वासयोग्य उपदेश की आवश्यकता

परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है (इब्रानियों 4:12), और यह विश्वास की नींव है (रोमियों 10:17)। यदि सेवक परमेश्वर के वचन को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं या गलत उपयोग करते हैं, तो वे लोगों को भटकाते हैं (2 पतरस 3:16)। इसीलिए पौलुस तीमुथियुस को चेतावनी देता है कि वह “बेकार और अपवित्र बातों” से बचे जो कलह और विभाजन को जन्म देती हैं:

“अनीति और व्यर्थ बातों से बच; क्योंकि वे और भी अधिक अभक्ति
की ओर बढ़ाएँगी।”
— 2 तीमुथियुस 2:16–18

कैसे जानें कि आप वचन का गलत उपयोग कर रहे हैं

पौलुस तीमुथियुस को यह भी चेतावनी देता है:

“इन बातों की लोगों को स्मरण दिला, और प्रभु के सामने उन्हें चितावनी दे कि वे शब्दों पर झगड़ा न करें, क्योंकि यह किसी

क्या मैं परमेश्वर के वचन का सही उपयोग कर रहा हूँ?

लाभ का नहीं, परंतु सुनने वालों के विनाश का कारण बनता है।”
— 2 तीमुथियुस 2:14

छोटी-छोटी बातों और व्यर्थ की धार्मिक बहसों में उलझना कलीसिया को नुकसान पहुँचाता है और विश्वासियों को भ्रमित करता है। पौलुस ऐसे झगड़ों की तुलना कैंसर (ग्रीक: gangrene) से करता है — एक घातक बीमारी जो यदि हटाई न जाए तो पूरे शरीर में फैल जाती है (2 तीमुथियुस 2:17)।

यह दर्शाता है कि झूठी शिक्षा और विवाद दूसरों के विश्वास को कमजोर कर देते हैं और कलीसिया में विभाजन लाते हैं (तीतुस 3:10–11)।

परमेश्वर की इच्छा: एकता, नम्रता और सत्य

पौलुस आगे कहता है:

“प्रभु का दास झगड़ा न करे, पर वह सबके साथ नम्र हो, शिक्षा देने में योग्य हो, और सहनशील हो। जो विरोध करते हैं, उन्हें नम्रता से सुधारता रहे; शायद परमेश्वर उन्हें मन फिराव का

क्या मैं परमेश्वर के वचन का सही उपयोग कर रहा हूँ?

अवसर दे, जिससे वे सच्चाई को जानें।”
— 2 तीमुथियुस 2:24–25

सच्ची सेवकाई के लिए विनम्रता, धैर्य और कोमलता अनिवार्य है। उद्देश्य यह नहीं है कि हम बहस जीतें, बल्कि यह कि लोग पुनर्स्थापित हों। परमेश्वर चाहता है कि पापी मन फिराएँ और सत्य को जानें (यूहन्ना 8:32)।

आज के समय में उपयोग

आज के समय में, मसीही विश्वासियों के बीच या अन्य लोगों के साथ बहसें अक्सर कठोर और निरर्थक हो जाती हैं। ये बहसें लोगों को मसीह से दूर कर देती हैं, पास नहीं लातीं।
यह इस बात का प्रमाण है कि हम परमेश्वर के वचन का सही उपयोग नहीं कर रहे हैं।

पौलुस की शिक्षाएँ हमें स्मरण दिलाती हैं कि हमें विश्वासयोग्य शिक्षा पर ध्यान देना है, व्यर्थ के झगड़ों से बचना है, और प्रेम व नम्रता में सेवा करनी है।

क्या मैं परमेश्वर के वचन का सही उपयोग कर रहा हूँ?

हमें भी, तीमुथियुस की तरह, यह प्रयास करना चाहिए कि हम परमेश्वर के ऐसे योग्य सेवक बनें जो उसके वचन को सही रीति से बाँटते हैं (2 तीमुथियुस 2:15)।
इसके लिए गहन अध्ययन, ईमानदारी और प्रेमपूर्ण सुधार आवश्यक हैं।

जब आप परमेश्वर के वचन को सही रीति से समझने और उसका प्रचार करने का प्रयास करते हैं, तो परमेश्वर आपको भरपूर आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp